बी.एच.डी.सी.–103 / आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिंदी कविता / बी.ए.ऑनर्स

स्नातक उपाधि प्रतिष्ठा (सी.बी.सी.एस.)
(बी.ए.ऑनर्स)

सत्रीय कार्य
(जुलाई, 2020 तथा जनवरी, 2021 सत्र के लिए)

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.सी.–103
आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिंदी कविता

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068

सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.सी.–103 / बी.ए.ऑनर्स

प्रिय छात्र / छात्राओ!
'आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिंदी कविता' पाठ्यक्रम में आपको एक सत्रीय कार्य करना है। यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य (टी.एम.ए.) है। सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किये गये हैं।

उद्देश्य : सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप स्वयं उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। उद्देश्य यह भी है कि अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा और समझा है उसे आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरंभ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1. ऐच्छिक पाठ्यक्रम के लिए कार्यक्रम दर्शिका में दिए गए विस्तृत निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए।
2. अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।
3. अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के प्रथम पृष्ठ के मध्य भाग में पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख कीजिए।
4. उत्तर पुस्तिका का प्रथम पृष्ठ निम्न प्रकार से शुरू होगा :

अनुक्रमांक : .....
नाम : .....
पता : .....
.....
.....

पाठ्यक्रम का नाम / कोड : .....
सत्रीय कार्य कोड : .....
अध्ययन केन्द्र का नाम / कोड : ..... दिनांक : .....

---

5. उत्तर के लिए केवल फुलस्केप के आकार के कागज़ का इस्तेमाल करें और उन कागज़ों को अच्छी तरह से बाँध लें।
6. प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें और अपनी ही लिखावट में उत्तर दें।
7. सत्रीय कार्य पूरा करके जाँच के लिए अपने अध्ययन केन्द्र के संयोजक (Coordinator) के पास निर्धारित तिथि तक अवश्य जमा करा दें।

सत्रीय कार्य जमा करने की अंतिम तिथि :

जुलाई 2020 सत्र के लिए : **30 अप्रैल, 2021**
जनवरी 2021 सत्र के लिए : **31 अक्टूबर, 2021**

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

सत्रीय कार्य में आपसे मुख्य रूप से तीन तरह के प्रश्न पूछे गए हैं।
उत्तर देने के लिए आप निम्नलिखित विधि से तैयारी करेंगे तो आपके लिए लाभप्रद होगा :

1. **अध्ययन :** सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में सभी खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से पुनर्व्यवस्थित कीजिए।

2. **अभ्यास :** अपने उत्तर का प्रारूप लिखने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। निबंधात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरंभ और उपसंहार का विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्ध और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,
ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (Paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हो,
ग) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा जो आपकी अभिव्यक्ति, शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो।
घ) उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबा न हो, और
ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

1. **प्रस्तुति :** जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसको साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप ज़ोर देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

2. **विशेष :** अपने उत्तर की फ़ोटो प्रति/कार्बन प्रति अपने पास अवश्य रखें।

शुभकामनाओं सहित!

नोट : याद रखें कि विश्वविद्यालय के नए नियमानुसार परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिंदी कविता
सत्रीय कार्य
(खंड 1 से 3 पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोडः बी.एच.डी.सी.103
सत्रीय कार्य कोड : बी.एच.डी.सी.103/टी.एम.ए./2020-21

कुल अंक : 100

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। दस अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग आठ सौ शब्दों में तथा पाँच अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग चार सौ शब्दों में दीजिए।

भाग–1

1. निम्नलिखित काव्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिएः 10X4=40

(क) के पतिआ लए जाएत रे
मोरा पियतम पास।
हिय नहि सहए असह दुख रे
भेल साओन मास।।
एकसरि भवन पिया बिनु रे
मोरा रहलो न जाय।
सखि अनकर दुख दारुन रे
जग के पतिआय।।
मोर मन हरि हरि लए गेल रे
अपनो मन गेल
गोकुल तजि मधुपुर बस रे
कत अपजस लेल।।
विद्यापति कबि गाओल रे
धनि धरु मन आस
आओत तोर मनभावन रे
एहि कातिक मास।।

(ख) सगुनहि अगुनहि नहिं कछु भेदा। गावहिं मुनि पुरान बुध बेदा।।
अगुन अरूप अलख अज जोई। भगत प्रेम बस सगुन सो होई।।
जो गुन रहित सगुन सोइ कैसें। जलु हिम उपल बिलग नहिं जैसें।।
जासु नाम भ्रम तिमिर पतंगा। तेहि किमि कहिअ बिमोह प्रसंगा।।
राम सच्चिदानंद दिनेसा। नहिं तहँ मोह निसा लवलेसा।।
सहज प्रकासरूप भगवाना। नहिं तहँ पुनि बिग्यान बिहाना।।
हरष बिषाद ग्यान अग्याना। जीव धर्म अहमिति अभिमाना।।
राम ब्रह्म ब्यापक जग जाना। परमानंद परेस पुराना।।

(ग) एक सु तीरथ डोलत है इक बार हजार पुराने बके हैं।
एक लगे जप में तप में इक सिद्ध समाधिन में अटके हैं।
चेत जु देखत हौ रसखान सु मूढ़ महा सिगरे भटके हैं।
साँचहि वे जिन आपुनपौ यह स्याम गुपाल पै वारि दके हैं।।4।।

(घ) जिस जा पे हांडी, चूल्हा तवा और तनूर है।
खालिक की कुदरतों का उसी जा जहूर है।।
चूल्हे के आगे आंच जो जलती हुजूर है।
जितने हैं नूर सब में यही ख़ास नूर है।।
इस नूर के सबब नज़र आती हैं रोटियां।।

भाग–2

2. कबीर की सामाजिक चेतना पर प्रकाश डालिए। 10

3. तुलसीदास की भक्ति की विशिष्टताओं का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। 10

4. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए : 5X2=10

(क) अमीर खुसरो का काव्य सौन्दर्य

(ख) सूरदास की कविता में वात्सल्य

भाग–3

5. घनानंद की कविताओं में अभिव्यक्त प्रेम, सौन्दर्य और श्रृंगार रीतिकालीन भाव-बोध से किस प्रकार भिन्न है, स्पष्ट कीजिए। 10

6. नजीर अकबराबादी के प्रकृति वर्णन की प्रमुख विशिष्टताओं को रेखांकित कीजिए। 10

7. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिएः 5X2=10

(क) रहीम के काव्य में लोक जीवन

(ख) बिहार के काव्य में संयोग और वियोग श्रृंगार